मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मनोविज्ञान के मुख्य संप्रदाय एवं उपागम

आधुनिक मनोविज्ञान ने अपने विकास क्रम में एक लम्बी यात्रा तय की है। कई विचारकों ने अपनी विचारधारा से इस विषय को समृद्ध किया है। इस क्रम में अनेक संप्रदायों (schools) और दृष्टिकोणों (view Points) तथा उपागम (Approaches) का उदय हुआ। मनोविज्ञान के वर्तमान स्वरूप को समझने हेतु इन सबों को समझना हमारे ज्ञान के क्षेत्र को बढ़ाएगा। आइए, देखें ये कौन से संप्रदाय और उपागम हैं, जिन्होंने मनोविज्ञान के वर्तमान स्वरूप को निखारने में अपनी भूमिका निभाई है —

1. संरचनावाद (Structuralism) —

संस्थापक — विल्हेल्म वुण्ट और उनके शिष्य टिचनर (1879)

स्थान — जर्मनी का लिपजिग

मनोविज्ञान की परिभाषा — मनोविज्ञान चेतन अनुभूति का विज्ञान

मनोविज्ञान की विषयवस्तु — चेतन अनुभूति का विश्लेषण

मनोविज्ञान की विधि — अंतर्निरीक्षण

2. प्रकार्यवाद (Functionalism)

संस्थापक — विलियम जेम्स, जॉन डेवी, एंजेल

स्थान — अमेरिका का शिकागो

मनोविज्ञान की परिभाषा — व्यक्ति की क्रियाओं के कार्य (functions) का अध्ययन करने वाला विज्ञान

मनोविज्ञान की विधि — अंतःनिरीक्षण के साथ बाह्य निरीक्षण

(3) व्यवहारवाद (Behaviourism)

संस्थापक – वाटसन (1913)

स्थान – अमेरिका का John Hopkins विश्वविद्यालय

मनोविज्ञान की परिभाषा – व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान

मनोविज्ञान की विधि – बाह्य निरीक्षण विधि

मनोविज्ञान की विषयवस्तु – व्यवहार (बाह्य)

(4) मनोविश्लेषणवाद (Psychoanalysis)

संस्थापक – सिगमण्ड फ्रायड (1911), युंग तथा एडलर ने भी योगदान किया

स्थान – आस्ट्रिया का वियना (यूरोप)

मूल विचारधारा – अचेतन मन, दमित इच्छाएँ एवं यौन भावनाएँ

विधि – मनोविश्लेषण

(5) गेस्टाल्ट सम्प्रदाय –

संस्थापक – मैक्स वर्दाईमर (1912), कोहलर एवं कोफ्का सहयोगी.

स्थान – जर्मनी

मनोविज्ञान की परिभाषा – मानसिक प्रक्रियाओं को उनकी सम्पूर्णता में समझने पर बल दिया

विषयवस्तु – प्रत्यक्षण एवं शिक्षण में सम्पूर्णता पर बल

विधि – Gestalt approach

उपरोक्त पाँच सम्प्रदायों के अलावा मनोविज्ञान में कुछ अन्य दृष्टिकोण भी विकसित हुए जिनमें मनोविज्ञान के विषयवस्तु मानव व्यवहार एवं अनुभव को अलग तरह से समझने का प्रयास हुआ, वे हैं –

(6) तंत्रिका शारीरिक दृष्टिकोण –

इसे शारीरिक मनोविज्ञान या तंत्रिका मनोविज्ञान भी कहा जाता है। इसमें व्यवहार के

शारीरिक आधारों को समझने की चेष्टा की जाती है। माना जाता है कि प्रत्येक व्यवहार के लिए हमारा तंत्रिका तंत्र जिम्मेवार होता है, और व्यवहार को समझने हेतु तंत्रिका तंत्र को समझना आवश्यक है। तंत्रिका मनोविज्ञान के रूप में एक नई शाखा का जन्म हुआ। इस दृष्टिकोण के लिए कैनन, लेश्ले तथा हेल्महॉल्ट्ज के नाम प्रमुख हैं।

(7) संज्ञानात्मक दृष्टिकोण —

यह दृष्टिकोण व्यवहार की व्याख्या व्यक्ति की संज्ञानात्मक (Cognitive) क्रियाओं के आधार पर करता है। इस दृष्टिकोण में S-O-R तीन महत्वपूर्ण प्रत्यय हैं —

S - Stimulus (उद्दीपन)
O - Organism (प्राणी)
R - Response (प्रतिक्रिया)

(8) मानवतावादी दृष्टिकोण —

मनोविज्ञान के इस दृष्टिकोण को मानने वाले मनुष्य के मानवतावादी गुणों जैसे - भावना, आत्म, आत्मसम्मान, वास्तविक आत्म तथा मानवीय आवश्यकताओं पर अधिक बल दिया। व्यक्ति को सम्पूर्ण मानवीय गुणों के साथ विकसित कर "स्व" संस्थापन को मनोविज्ञान का लक्ष्य माना। इसके संस्थापक - कार्ल रोजर्स (1939) तथा अब्राहम मस्लो (1971) हैं।

(9) सकारात्मक मनोविज्ञान —

मनोविज्ञान के इस दृष्टिकोण ने मनुष्य के नकारात्मक गुणों जैसे - चिंता, अवसाद, मानसिक रोगों के स्थान पर उसके सकारात्मक पहलु - कुशलता, खुशी (Happiness), व्यक्तिगत कुशलता आदि मानसिक प्रक्रियाओं पर अधिक बल दिया। जीवन का परम लक्ष्य खुश रहना एवं खुशी प्रदान करना माना गया। माना गया कि इन सकारात्मक पहलुओं को समझ कर और इनपर अध्ययन

कर मानव जीवन की गुणवत्ता को अधिक समृद्ध और कुशल बनाया जा सकता है। इसके संस्थापकों में Martin Seligman (2002) Diener (2000) Lopez (2009) इत्यादि हैं। मनोविज्ञान में इस दृष्टिकोण पर अनेक अध्ययन, अनुसंधान और प्रयोग किए जा रहे हैं।

इस तरह मनोविज्ञान, जिसके केन्द्र में मनुष्य है और इसी का अध्ययन इसका उद्देश्य है, समय-समय पर अनेक विचारधाराओं और संप्रदायों के योगदान से वर्तमान तक पहुँचा है, भविष्य की संभावनाएँ भी अपरम्पार हैं क्योंकि मनुष्य जैसा कि Shakespeare ने कहा है –

"What a piece of work is man, how noble in reason! how infinite in faculty.......

चूँकि मनुष्य की क्षमताएँ अनगिनत हैं, अतः मनोविज्ञान भी असीमित संभावनाओं वाला विज्ञान है भौतिक विज्ञानों की तरह यह अपने खास विषय तक ही सीमित नहीं है।

Choudhary
Shriti Choudhary
Ph.D.
Department of Psychology
RLSY College, Kokar
Ranchi

CCI
SEM - I

मनोविज्ञान : एक परिचय

मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु है स्वयं एवं दूसरों को समझने की जिज्ञासा अनजान होती है, इसी जिज्ञासा ने मनोविज्ञान को जन्म दिया है।

मनोविज्ञान अन्य विज्ञानों की तुलना में एक नया विज्ञान है परंतु विडम्बना यह है कि यह अन्य विज्ञानों की तुलना में सबसे पुराना है, इतना पुराना जितना कि मानव अस्तित्व। (Psychology has a short History but long Part)

कल्पना करें जब मनुष्य प्रजाति विकसित हुयी होगी — गुफाओं और कन्दराओं में रहती होगी। उस समय भी उसका मन सक्रिय क्रियाशील रहता होगा, उसके अनुभव एवं संबंधित व्यवहार घटित होते ही होंगे।

मनोविज्ञान व्यक्ति के इन्हीं अनुभवों एवं व्यवहारों का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला विज्ञान है, अतः यह अति.प्राचीन है।

प्राचीन काल में हमारे ऋषि मुनि एवं दार्शनिकों ने मानव व्यवहार को समझने का प्रयास किया था। यह प्रयास भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों दर्शनों में उपलब्ध है।

किन्तु मनोविज्ञान को एक विज्ञान का रूप देने वाले प्रथम मनोवैज्ञानिक को हम विल्हेल्म वुण्ट के नाम से जानते हैं, जिन्होंने सन् 1879 में जर्मनी के लिपजिंग नामक स्थान में मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना की। वुण्ट को मनोविज्ञान का पिता भी कहा जाता है क्योंकि - इन्होंने मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग एक स्वतंत्र विज्ञान का रूप दिया।

- मनोविज्ञान की परिभाषा, विषयवस्तु एवं विधि सुनिश्चित की।

- मनोविज्ञान के बिखरे हुए ज्ञान को एक स्थान पर समेटा और विशेष संप्रदाय (School) की स्थापना की जिसे संरचनावाद कहते हैं।

उधर के मनोविज्ञान का स्वरूप आज विकास की लम्बी यात्रा तय कर एक सम्पूर्ण प्रयोगात्मक विज्ञान का रूप ले चुका है। इस यात्रा में मनोविज्ञान ने कई पड़ाव तय किए हैं और इन पड़ावों पर उसके स्वरूप में कई बदलाव आए हैं। इन बदलावों में मनोविज्ञान के विभिन्न सम्प्रदायों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जैसे :-

→ प्रकार्यवाद
→ व्यवहारवाद
→ गेस्टाल्टवाद
→ मनोविश्लेषणवाद
→ तंत्रिकीय शारीरिक दृष्टिकोण (जैव-मनोविज्ञान)
→ संज्ञानात्मक दृष्टिकोण
→ मानवतावादी दृष्टिकोण
→ समाकलनात्मक मनोविज्ञान दृष्टिकोण

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ एवं इसकी विषयवस्तु इन सभी दृष्टिकोणों के अनुसार बदलती और निखरती गयी है।

आइए, देखें, मनोविज्ञान की परिभाषाएँ कैसे आलोचनात्मक ढंग से परिस्कृत हुई हैं।

★ दर्शनशास्त्रियों ने मनोविज्ञान को "आत्मा का विज्ञान" माना था।

परंतु आत्मा पर वैज्ञानिक अध्ययन संभव नहीं थे।

★ बाद में मनोविज्ञान को "मन का विज्ञान" कहा गया।

किंतु आत्मा की तरह मन भी अदृश्य था।

- व्यवहारवादियों ने मनोविज्ञान को 'व्यवहार का विज्ञान' कहा और यहीं से मनोविज्ञान में वस्तुगत अध्ययन की परम्परा का विकास हुआ।
- किन्तु व्यवहार का अध्ययन अनुभूति के अध्ययन के बिना अधूरा था, अतः मनोविज्ञान को व्यवहार और अनुभूति दोनों का अध्ययन करने वाला विज्ञान माना गया।
- व्यवहार और अनुभव दोनों मिल कर क्रिया (Action, Activities) बनाते हैं अतः मनोविज्ञान को व्यक्ति की क्रियाओं का विज्ञान भी कहा जाता है — ये क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं,

व्यक्ति की क्रियाएँ
- शारीरिक
- मानसिक

- मनोविज्ञान में व्यक्ति की सारी क्रियाओं का अध्ययन होता है परंतु मुख्य विषय हमारी मानसिक क्रियाएँ हैं।
- इसी तरह आधुनिक मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञान को व्यक्ति की क्रियाओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान मानते हैं जो अपनी विभिन्न शोध विधियों द्वारा व्यक्ति के व्यवहारों और अनुभवों के विभिन्न आयामों का अध्ययन कर उनके तथ्यों का पता लगाती है।
- मनोविज्ञान का प्रमुख लक्ष्य स्वयं एवं दूसरों के व्यवहारों को समझना, उनकी भविष्यवाणी करना एवं उनका नियंत्रण तथा निर्देशन करना है।
- मनोविज्ञान विभाग राँची विश्वविद्यालय के पुराने लोगो (Logo) में मनोविज्ञान के लक्ष्य को उजागर किया गया है जिसमें आत्मानं विद्धि (To know Theyself) को मनोविज्ञान का लक्ष्य माना गया है।

आइए, मनोविज्ञान पढ़ें स्वयं एवं दूसरों को समझने का प्रयास करें।

Chaudhary